RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

चाँदपुर के सर्वेक्षण से ज्ञात प्राचीन मूर्ति–शिल्प : एक अध्ययन

गोविन्द सिंह दांगी

शोद्यार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
चाँदपुर, प्रतिमा, ध्वंशावशेष, अलंकरण आयुध इत्यादि

***Corresponding Author**
Email: govindkusumghar1988[at]gmail.com

ABSTRACT

विन्ध्य पर्वत श्रंखला में स्थित बुन्देलखण्ड के सागर जिले की रहली तहसील के अंतर्गत आने वाला चाँदपुर नामक ग्राम पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र कल्चुरि एवं चंदेलों के अधिकार में रहा है। चाँदपुर से 15 किलो मीटर दूर स्थित रहली चंदेल शासकों की राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रही है। जिसके स्पष्ट प्रमाण रहली में स्थित 9 वीं 10 वीं शताब्दी ईस्वी का सूर्य मंदिर एवं उसमें प्रदर्शित प्रतिमाएँ हैं। ग्राम के सर्वेक्षण से विविध धर्मों से संबंधित प्राचीन मंदिरों एवं मूर्तियों के ध्वंशावशेष प्राप्त हुए हैं जो कलात्मक दृष्टि से पूर्व मध्यकालीन प्रतीत होते हैं। सर्वेक्षण से ज्ञात पुरावशेष वैष्णव, शैव, सौर शाक्त जैन आदि धर्मों से संबंधित हैं। ज्ञात पुराशेषों के आधार पर अनुमान लगाया जा सकता है कि पूर्व मध्यकालीन शासकों ने विविध धर्मों को संरक्षण के साथ साथ उनके विकास में भी पुर्ण सहयोग किया।

शोध की दृष्टि से इस ग्राम के आस–पास के क्षेत्रों में विस्तृत रुप से सर्वेक्षण कि आश्यकता है। विस्तृत सर्वेक्षण से वृहद रुप में मूर्तियों, मन्दिरों आदि पुरावशेषों की प्राप्ति होने की संभावना है। जिससे संबंधित क्षेत्र की संस्कृति तथा प्राचीन स्थापत्य मूर्तिकला को समझने में सुविधा होगी एवं इस क्षेत्र के धार्मिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पर नवीन प्रकाश पडेगा।

ईश्वर उपासना का प्रमुख आधार प्रतिमा पूजा रहा है, प्रतिमा निर्माण की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। निश्चित रुप से कहा जा सकता है कि प्रतिमा निर्माण का आरम्भ भारत की प्राचीनतम सभ्यता सैंधव–सभ्यता से ही हो चुका था।[1] प्रतिमा निर्माण की परम्परा में कालगत परिवर्तन होता रहा है। सागर जिला भी समय–समय पर कल्चुरि एवं चंदेलों के अधीकार में रहा है।[2] इसी क्रम में सागर जिले की रहली तहसील के चाँदपुर नामक ग्राम से अन्वेषण के द्वारा चंदेल एवं कल्चुरियों द्वारा बनवाये गये मंदिरों एवं मूर्तियों के प्रमाण प्राप्त हुये हैं।

वर्तमान चाँदपुर नामक ग्राम सागर जिले की रहली तहसील के अंतर्गत 23^0 33′ उत्तर तथा 79^0 5′ पूर्व में सागर–जबलपुर मार्ग पर रहली से 15 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, तथा दूसरा मार्ग गौरझामर–रहली मार्ग से भी चाँदपुर ग्राम पहुँचा जा सकता है। पुरातात्विक दृष्टि से यह ग्राम महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ चन्देल एवं कल्चुरि शासकों द्वारा शैव, वैष्णव तथा सौर धर्म से संबंधित प्रतिमाओं तथा मंदिरों का निर्माण कराया गया, जिसके प्रमाण यहाँ से सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त बहुसंख्यक मूर्तियों एवं मदिरों के भग्नावशेषों से प्राप्त होते हैं। ग्राम में एक मध्यकालीन जैन मदिर भी विद्यमान है, इस पुरास्थल से प्राचीन कालीन मंदिर एवं मूर्तियों के भग्नावशेषों के साथ–साथ मुगलकालीन सिक्के भी सर्वेक्षण से प्राप्त होते हैं। ग्राम के अन्वेषण से प्राप्त प्रतिमाओं का विवरण निम्नानुसार है :

विष्णु प्रतिमा :

वैष्णव पुराणों में विष्णु के विविध रुपों का वर्णन हुआ है। जिनमें विष्णु को दो, चार या आठ भुजाओं वाले विविध आयुधों को धारण करने वाले, सुंदर आभूषणों से अलंकृत विष्णु का वर्णन किया गया है। प्राचीन भारतीय सम्प्रदायों में विष्णु के उपासकों का वैष्णव सम्प्रदाय प्रमुख स्थान रखता है। विदिशा के पास हेलियोडोरस के गरुण स्तम्भ लेख से वैष्णव धर्म के तात्कालीन समय में प्रतिष्ठित होने के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं।[3] जो विष्णु उपासना का प्राचीनतम पुरातात्विक प्रमाण माना जाता है।

प्रतिमा विज्ञान में विष्णु की चारों भुजाओं में धारण किये हुये आयुधों का वर्णन है जिनमें शंख, चक्र, गदा, पद्मादि का वर्णन किया गया है। यदा–कदा विष्णु के तीन हाथों में आयुध तथा चौथा हाथ वरद, शान्ति, अभय आदि मुद्रा में होता है।[4] रहली तथा उसके आसपास के क्षेत्रों से विष्णु के विविध अवतार तथा वैष्णव धर्म से सम्बन्धित अनेक प्रतिमाओं की प्राप्ति होती है।[5]

चाँदपुर से सर्वेक्षण के द्वारा एक देवी मंदिर में चतुर्भुजी विष्णु की प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसी प्रकार की प्रतिमा का उल्लेख भारतीय शिल्प संहिता में हुआ है। भारतीय शिल्प संहिता के अनुसार चतुर्भुजी विष्णु के दायें दोनों हाथों में गदा, पद्म और बायें दोनों हाथों में शंख, चक्र होते हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

ऐसी मूर्तियाँ राजभवन या श्रीमंतों के महालयों में रखनी चाहिए।[6] कभी–कभी एक हाथ वरद् मुद्रा में रहता है। इस प्रकार की प्रतिमाएं रहली एवं उसके आस पास के क्षेत्रों से प्राप्त हुई हैं।[7] विवेचित चतुर्भुजी विष्णु के बांयी ऊपरी भुजा में चक्र एवं नीचे की भुजा में शंख है तथा दांयी ऊपरी भुजा में गदा एवं नीचे की भुजा वरद् मुद्रा में है। किरीटमुकुट, कर्णकुण्डल, ग्रेवेयक, वनमाला, धोती, कटिसूत्र, केयर से सुशोभित देवता प्रभामण्डल से युक्त हैं। विष्णु के सिर के दोनों ओर विद्याधर माला लिये प्रदर्शित हैं। विष्णु के दांयी ओर गदा पुरुष तथा बांयी ओर शंख पुरुष प्रदर्शित हैं। प्रतिमा के पैरो के दोनों ओर अनुचर प्रदर्शित हैं। प्रतिमा की (ऊँ 23 ई. चौ. 14 ई.)

गणेश प्रतिमा : पौराणिक देव मण्डल में गणों के प्रमुख गणपति का महत्वपूर्ण स्थान है। पुराणों के आधार पर शिव ने उन्हें अपने गणों का प्रमुख बनाया था। शिव पुराण, वराह पुराण, ब्राह्मण पुराण, मत्स्य पुराण, वृहतसंहिता, विष्णुधर्मेतर, पुराण आदि में गणेश के जन्म एवं रुप को लेकर अनेक विवरण प्राप्त होते हैं। वर्तमान समय में किसी भी धार्मिक संस्कार, यज्ञ, होम, पूजन, कथा आदि की प्राथमिक पूजा में गणेश की पूजा–आराधना अनिवार्य एवं प्राथमिक रुप में होती है। मारुति नंदन तिवारी के अनुसार वर्तमान में सभी शुभाशुभ कार्यों के पूर्व अनिवार्य रुप से गणेश का पूजन–अर्चन किया जाता है।[8] गणपति प्रतिमा विधान का प्राचीनतम विवरण हमें वाराहमिहिर की वृहतसंहिता में प्राप्त होता है।[9]

चाँदपुर ग्राम के मध्य में सर्वेक्षण के द्वारा एक चबूतरे पर स्थापित गणेश प्रतिमा प्राप्त हुई है। दो पार्श्व स्तम्भों के मध्य

चतुर्भुजी गणेश प्रतिमा प्रदर्शित है। देवता अर्द्धपर्यंक मुद्रा में आशनस्थ हैं। करंद मुकुट, शूर्पकर्ण, एक दंत, गणेश अपनी सूड़ से बांये निचले हाथ पर रखे मोदक पात्र से मोदक उठा रहे हैं। बांये ऊपर के हाथ का आयुध अस्पष्ट हैं तथा दायें ऊपर वाली भुजा में परशु है एवं नीचे वाली भुजा का आयुध अस्पष्ट है। अग्निपुराण के अनुसार गजमुख, लम्बोदर, शूर्पकर्ण, चतुर्भुजी गणपति के हाथों में स्वदंत, परशु कमल और मोदक होना चाहिए। प्रतिमा के दोनों ओर गजसार्दुल खड़े है। प्रतिमा की (ऊँ 14 ई., चौ. 24 ईच) है।

हनुमान प्रतिमा :

पंचायतन–पूजा का प्रसार हो जाने पर हिन्दुओं में अन्य देवताओं का पूजन स्वाभाविक हो जाता है क्योंकि उनका संबंध उन पाँचों (विष्णु, शिव सूर्य दुर्गा एवं गणेश) से किसी–न–किसी रुप में पुराणों में वर्णित है। वर्णानुसार हनुमान राम से संबंधित बताये गये हैं।[10] पूर्व मध्यकाल में गौण देवी–देवताओं में हनुमान का प्रमुख स्थान हो गया था। मध्यप्रदेश के कल्चुरि नरेशों के सिक्कों पर भी हनुमान की आकृति प्राप्त होती है।[11]

चाँदपुर के सर्वेक्षण से हनुमान प्रतिमा प्राप्त हुई है। प्रतिमा द्विभुजी है, वीरभाव में प्रदर्शित हनुमान के सिर पर मुकुट हार, ग्रेवेयर उपवीत कटिबंध, भुजबंध, कंकण धोती तथा

अधोवस्त्र सुशोभित है। हनुमान का बांया हाथ वक्ष के समीप व्याख्यान मुद्रा में है, दायां हाथ भग्न है तथा दोनों पैरों के घुटने के नीचे का भाग भी भग्न है, उनके कमरपट्ट में कटार है तथा पृष्ठ भाग में पूँछ का भाग स्पष्ट दृष्टव्य है, घुटने के नीचे का हिस्सा दो भागों में टूट गया है। प्रतिमा पर सेंदुर आदि का लेप कर दिया गया है। प्रतिमा की (ऊँ. 42 इंच, चौ. 19 इंच) आस–पास के क्षेत्र से भी इसी प्रकार की प्रतिमाऐं प्राप्त हुई हैं।

सूर्य प्रतिमा :

सूर्योपासना का प्राचीनतम साहित्यिक साक्ष्य ऋग्वेद के रुप में उपलब्ध है। वेदों में सूर्य को स्वर्ण पंखों युक्त पक्षी के रुप में चित्रित किया गया है, जो अपने पंख फैलाकर समस्त संसार को अपनी स्वर्णिम रश्मियों की आभा से रंग देता है।[12] प्रतिमाशास्त्र संबंधी अनेक ग्रन्थों में सूर्य–प्रतिमा निर्माण विधान का उल्लेख किया गया है। सूर्योपासना के संबंध में ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, रुपमण्डन, वृहतसंहिता, विष्णुधर्मोत्तर पुराण आदि से जानकारी प्राप्त होती है। वैदिक काल में सूर्य–प्रतिमा, निर्माण की स्पष्ट जानकारी नहीं होती है, महाभारत तथा रामायण में सूर्य के मानवीय रुप का वर्णन किया गया है, किन्तु उनका यह रुप प्रतिमा शास्त्रीय रुप नहीं है। आगे चलकर सूर्य के उपासकों का एक अलग सम्प्रदाय ही बन गया, जो 'सौर' सम्प्रदाय कहलाता था।[13] पूर्व मध्य काल तक आते–आते सूर्य पूजा अत्यधिक लोकप्रिय हो गई जिस कारण देश के विभिन्न भागों में सूर्य–मंदिरों का निर्माण हुआ। मार्तण्ड (कश्मीर) चिदम्बरम (तमिलनाडु), कोणार्क (उड़ीसा), मोढ़ेरा (गुजरात) के सूर्य मंदिर चारों दिशाओं में स्थित है। सागर जिले के रहली तहसील में भी 9वीं 10वीं शताब्दी में सूर्य मंदिर का निर्माण किया गया जो वर्तमान में मूल रुप में नहीं है।[14]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रहली तहसील के चाँदपुर ग्राम से सर्वेक्षण के द्वारा एक जैन मंदिर की दीवार में प्रदर्शित सूर्य प्रतिमा प्राप्त हुई है, सूर्य दो पार्श्व स्तम्भों के मध्य स्थानक मुद्रा में खड़े हैं। प्रतिमा द्विभुजी है सूर्य के दोनों हाथों में सनाल कमल हैं। सूर्य कर्णाभूषण, ग्रवेयर, हार यज्ञोपवीत, धोती, अधोवस्त्र आदि आभूषणों से सुसज्जित हैं, सूर्य दोनों पैरों में उपानह धारण किये हैं, दोनों पैरों के बीच भू–देवी महाश्वेता खड़ी हैं, सूर्य के दोनों ओर व्यालों की आकृति है। प्रतिमा की (ऊँ. 14 ईच, चौ. 14 इंच)

देवी प्रतिमा :

देवी उपासना की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है, हड़प्पा मोहनजोदड़ों, चन्हुदड़ो इत्यादि स्थलों की खुदाई में मिट्टी की अनेक नारी आकृतियाँ उपलब्ध हुई हैं, प्रायः सभी विद्वान सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त अधिकांश नारी–मृण्मूर्तियों को मातृ–देवी की मूर्तियाँ मानते हैं।[15] सिन्धु सभ्यता से लेकर वर्तमान काल तक देवी उपासना को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है, देवी पूजन की परम्परा मुख्यतः दो रुपों में मिलती है–एक मातृदेवी के रुप में और दूसरी शक्ति के रुप में।[16] गौरी शिव की शक्ति उमा या पार्वती के विभिन्न रुपों का समुच्च हैं, जिसे सामान्यतः वरद या अभय मुद्रा, अक्षमाला, पद्म और कमण्डलु से दर्शाया गया है।[17]

चाँदपुर से सर्वेक्षण के द्वारा एक जैन मंदिर की दीवार में दो पार्श्व स्तम्भों के मध्य प्रदर्शित चतुर्भुजी देवी प्रतिमा प्राप्त हुई है। देवी करद मुकुट, कर्णाभूषण, हार, ग्रीवा, उपबंद, कटिसूत्र, केयूर, हस्तवलय, पाद्वलय आदि अलंकरणों से अलंकृत हैं। चतुर्भुजी देवी का दायां नीचे का हाथ वरद् मुद्रा में है एवं बायें नीचे के हाथ में कमण्डलु से युक्त दर्शाया गया है। ऊपर के दोनों हाथों के आयुध स्पष्ट नहीं है। स्थानक देवी के दोनों ओर पार्श्व स्तम्भों से सटे व्याल खड़े हैं।

महिषासुर मर्दनी :

इसी जैन मंदिर की दीवार में पार्श्व स्तम्भों के मध्य प्रदर्शित महिषासुर मर्दनी प्रतिमा प्राप्त हुई है, प्रतिमा चतुर्भुजी है जिसमें देवी को दायीं भुजा से महिष पर प्रहार करते हुए

प्रदर्शित किया गया है। देवी दूसरी भुजा से महिष का मुख पकड़े है। स्थानीय लोगों के द्वारा चूना पेन्ट आदि की पुताई के कारण देवी के अन्य आयुध स्पष्ट नहीं हो पा रहे हैं। प्रतिमा के दोनों ओर ब्यालाकृति दृष्टव्य है।

शिवलिंग :

साहित्य में शिवलिंग के तीन भागों का वर्णन किया गया है, ब्रह्म–भाग, विष्णु–भाग, रुद्रभाग। मनुष्य द्वारा निर्मित लिंग (मानुष–लिंग) एक बड़े प्रस्तर से तैयार किया जाता है, जिसका निचला भाग चौकोर होता है, जिसे ब्रह्म–भाग कहते है। आठ कोश का मध्य भाग 'विष्णु–भाग' तथा ऊपरी अंश गोलाकार रहता है, जिसकी पूजा की जाती है, जिसे पूजा भाग या 'रुद्र–भाग' कहते है।[18]

चाँदपुर ग्राम से पीपल वृक्ष के नीचे स्थापित शिवलिंग

उल्लेखनीय है, शिवलिंग का ऊपरी भाग गोलाकार है एवं आधार भाग अष्टकोणीय है। जलहरी का आकार चौकोर है। (शिवलिंग की ऊँचाई 10 इंच, जलहरी 36×26.5 इंच)।

यहीं से एक स्थानीय मंदिर में एक अन्य शिवलिंग प्राप्त हुआ है, जिसका ऊपरी भाग गोलाकार है जिस पर स्थानीय लोगों ने धातु का आवरण चढ़ा दिया है। जिस कारण मूल शिवलिंग दिखाई नहीं देता। जलहरी के आकार प्रकार को देखकर यह शिवलिंग पूर्व मध्यकालीन प्रतीत होता है।

उमा महेश्वर :

चाँदपुर से अनन्तपुरा ग्राम की ओर जाने वाली सड़क पर चाँदपुर ग्राम से निकलते ही सड़क की बायीं ओर एक चबूतरे पर उमा–महेश्वर प्रतिमा प्रदर्शित है जिसमें उमा शिव के वामांग आलिंगन मुद्रा में बैठी हुई हैं। शिव के सिर पर जटा मुकुट एवं कानों में कुण्डल हैं, उमा भी केश विन्यास से

सुसज्जित हैं, वह कर्ण आभूषण धारण किये हैं। दोनों के पैरों में आभूषण दृष्टव्य हैं। प्रतिमा में आयुध एवं हाथों की मुद्रायें प्रतिमा भग्न होने के कारण अस्पष्ट हैं।

निष्कर्ष :

रहली से 15 किलो मीटर की दूरी पर स्थित यह ग्राम पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। रहली चंदेल शासकों की राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रही हैं। यहाँ से ज्ञात 9 वीं 10 वीं शताब्दी ईस्वी का सूर्य मंदिर एवं उसमें लगी पूर्व मध्यकालीन विविध धर्मों से संबंधित प्रतिमाओं से ज्ञात होता है कि चंदेल शासकों द्वारा विविध धर्मों को संरक्षण प्राप्त था एवं इनके विकास हेतु अनेक कार्य किये गए थे। यह ग्राम भी चंदेलों के अधिकार क्षेत्र में रहा अतः उन्होंने इस ग्राम में भी अनेक मंदिरों एवं मूर्तियों के निर्माण में रूचि ली जिसके प्रमाण संपूर्ण ग्राम में यत्र तत्र विखरे हैं। इस क्षेत्र की तात्कालिक आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थिति के अध्ययन हेतु इन प्रतिमाओं के अलंकरण वस्त्राभूषण आदि से सहायता प्राप्त होगी ।

ग्राम के आस–पास के क्षेत्रों में विस्तृत सर्वेक्षण तथा गहन शोध किया जाये तो वृहद रुप में मूर्तियों, मंदिरों आदि महत्वपूर्ण पुरावशेषों की प्राप्ति होने की संभावना है, जिससे संबंधित क्षेत्र की प्राचीन स्थापत्य एवं मूर्तिकला को समझने में सुविधा होगी। विवेच्च क्षेत्र की कला परम्परा में चन्देल तथा कल्चुरि कालीन स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प का प्रभाव परिलक्षित होता है।

संदर्भ :

1. श्रीवास्तव, बृजभूषण, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति कला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015 पृ. 2
2. गौर, चंद्रभान सिंह, सागर जिले से प्राप्त वैष्णव प्रतिमाओं का अध्ययन, सागर प्रकाशन, सागर, 2000, पृ. 14
3. गुप्त, परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख, (भाग–1), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2002 पृ. 83
4. मिश्र, इन्दुमती, प्रतिमा–विज्ञान, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 2009, पृ. 131
5. बाजपेयी, के. डी., सागर थ्रो द एजेज, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1964, पृ. 42
6. सोमपुरा, प्रभा शंकर, ओं, भारतीय शिल्प संहिता सोमैया पब्लिकेशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 1975, पृ. 105
7. मिश्र, मनीष, सागर जिले का सांस्कृतिक इतिहास, सी.पी.जे. पब्लिकेशन, सागर (म.प्र.) 1998, पृ. 46,49
8. तिवारी, मारुतिनंदन, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1997 पृ. 151
9. श्रीवास्तव, बृजभूषण, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति कला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015 पृ. 137
10. उपाध्याय, वासुदेव, प्राचीन भारतीय मूर्ति–विज्ञान, चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी, 1982, पृ. 129
11. उपाध्याय, वासुदेव, पूर्वोल्लिखित, पृ. 129
12. चन्द्र, दिनेश, प्रतिमा विज्ञान एवं दर्शन, स्वागत अपार्टमेन्ट नवा वाडज, अहमदाबाद 1995, पृ. 21
13. श्रीवास्तव, बृजभूषण, पूर्वोल्लिखित, पृ. 85
14. रायकवार, गिरधारी लाल, रेहली का सूर्य मंदिर, संचालनालय, पुरातत्व एवं संग्रहालय, भोपाल, 1984, पृ. 7
15. थपल्याल, किरण कुमार, संकटा प्रसाद शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2003, पृ. 174
16. तिवारी, मारुतिनंदन, पूर्वोल्लिखित, पृ. 121
17 वहीं, पृ. 121
18. .उपाध्याय, वासुदेव, पूर्वोल्लिखित, पृ. 87

RRIJM 2015, All Rights Reserved